एनुअल फंक्शंस ट्रेंड | सभी को परफॉर्म करने का मौका मिले इसलिए स्कूल में 2 से 4 दिनों तक चल रहे कार्यक्रम

आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक प्रस्तुति दे रहे बच्चे

सिटी रिपोर्टर . इंदौर

रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य, अभिज्ञान शाकुन्तलम् जैसे महान नाटक, चंद्रयान और मंगल मिशन जैसी महान वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ रानी दुर्गावती से लेकर जमशेद टाटा तक की प्रेरणास्पद गाथाएं...स्कूल के एनुअल फंक्शन में अब सिर्फ फ़िल्मी गीत-संगीत नहीं बल्कि देश की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को संजोया जा रहा है। नई पीढ़ी तक देश की इस विरासत को पहुंचाने के लिए एनुअल फंक्शन के दो से तीन महीने पहले तैयारी शुरू कर दी जाती है। अब एनुअल फंक्शन को सिर्फ एक दिन तक सीमित रखने के बजाए 2 से 4 दिनों तक चलाया जा रहा है, ताकि स्कूल के हर बच्चे को स्टेज पर आकर परफॉर्म करने का मौका मिल पाए।

लोककला और संस्कृति से जोड़ने का प्रयास

असम के बिहू, महाराष्ट्र के लावणी, राजस्थान के घूमर और पंजाब के भांगड़े के साथ ही अब स्कूलों में कई जनजातीय लोकनृत्यों को भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रमुखता से शामिल किया जा रहा है, ताकि विद्यार्थी हमारे देश की सांस्कृतिक विविधता से परिचित हो पाएं। इसके लिए टीचर्स रिसर्च करते हैं ताकि उन लोकनृत्यों को उनके मूल रूप में प्रस्तुत किया जा सके। साथ ही इन लोकनृत्यों में उपयोग होने वाले वाद्ययंत्र भी वही होते हैं, जिनका इस्तेमाल पारंपरिक रूप से किया जाता है।

देश की महान हस्तियों का जीवन वृतांत

एनुअल फंक्शन के दौरान रानी लक्ष्मीबाई और दुर्गावती, महाराणा प्रताप और वीर शिवाजी जैसे हस्तियों के साथ ही आधुनिक युग के प्रणेताओं जैसे जमशेद जी टाटा और एपीजे अब्दुल कलाम के जीवन का वृतांत भी म्यूजिकल ड्रामा के रूप में पेश हो रहा है। उनकी कहानी का नाट्य रूपांतरण करते हुए उसमें नृत्य को भी जोड़ा जाता है। इससे पूरी प्रस्तुति फिल्म जैसी लगती है। प्रिंसिपल आशा नैयर कहती हैं कि हम चाणक्य और चन्द्रगुप्त मौर्या, रानी दुर्गावती जैसे किरदारों के जरिए बच्चों को अपने गौरवशाली इतिहास से जोड़ने का प्रयास करते हैं। टीचर्स दो से तीन महीने पहले से ही थीम पर काम करना शुरू कर देती हैं।

एक से डेढ़ घंटे के महाकाव्यों और नाटकों का मंचन हो रहा

आमतौर पर एनुअल फंक्शन्स में 20 मिनिट के अधिक के नाटक नहीं होते थे पर अब यह ट्रेंड चेंज हो रहा है। रामायण और महाभारत जैसे देश के महाकाव्यों से लेकर कालिदास के ख्यात नाटकों के मंचन के लिए अब स्कूल एक से डेढ़ घंटे तक के फूल लेंथ प्ले क्रिएट कर रहे हैं। एमरल्ड हाइट्स इंटरनेशनल स्कूल के डायरेक्टर सिद्धार्थ सिंह कहते हैं कि हमने चौथी और पांचवी कक्षा के पांच सौ बच्चों के साथ रामायण का मंचन किया था। डेढ़ घंटे चले इस नाटक में एक बार भी पर्दा नहीं गिराया गया था। इसी तरह द मिलेनियम स्कूल की प्रिंसिपल संगीता उप्पल ने बताया कि इस बार के एनुअल फंक्शन की थीम में चारों युगों को एक व्यक्ति के जीवन काल से जोड़ते हुए प्रस्तुत किया गया था। सतयुग में भक्त प्रल्हाद की कथा से लेकर भगवान विष्णु के सभी अवतारों की कहानी बताते हुए उन्हें रियल लाइफ लर्निंग से जोड़ा गया था।

Scanned with CamScanner